

नुआखाई जुहार महोत्सव

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में भारत के प्रधानमंत्री ने नुआखाई जुहार महोत्सव (23 अगस्त) के अवसर पर किसानों को बधाई दी।

नुआखाई जुहार महोत्सव के बारे में

- ❖ 'नुआखाई' शब्द का प्रयोग नए चावल खाने को दर्शाता है क्योंकि 'नुआ' का अर्थ है नया और 'खाई' का अर्थ है खाना।
- ❖ नुआखाई जुहार महोत्सव पश्चिमी ओडिशा और दक्षिणी छत्तीसगढ़ में आदिवासी लोगों द्वारा मनाया वाला जाने वाला एक कृषि त्यौहार है।
- ❖ यह भाद्रपद या भाद्र (अगस्त-सितंबर) के चंद्र पखवाड़े में पंचमी तिथि (पांचवें दिन) को अर्थात् गणेश चतुर्थी के ठीक बाद में मनाया जाता है। प्रारंभ में इस त्यौहार को मनाने का समय निर्धारित नहीं था। परंपराओं में, किसान, ग्राम प्रधान और पुजारी द्वारा निर्दिष्ट दिन पर नुआखाई मनाते थे। बाद में, शाही परिवारों के संरक्षण ने इसे पूरे कोसल क्षेत्र (पश्चिमी ओडिशा क्षेत्र) में मनाये जाने वाले एक सामूहिक सामाजिक-धार्मिक आयोजन में बदल दिया।
- ❖ इसमें किसान अपनी भूमि से पहली उपज ओडिशा के संबलपुर जिले की प्रसिद्ध 'देवी माँ' देवी सामलेश्वरी को अर्पित करते हैं।
- ❖ नुआखाई त्यौहार की उत्पत्ति पंचयज्ञ में वैदिक काल से मानी जाती है। जब ऋषियों (ऋषि) ने पंचयज्ञ की बात की थी, एक कृषि समाज के वार्षिक कैलेंडर में पांच महत्वपूर्ण गतिविधियों को अर्थात् सीतायज्ञ (भूमि की जुताई), प्रवापन यज्ञ (बीज की बुवाई), प्रलंबन यज्ञ (फसलों की प्रारंभिक कटाई), खला यज्ञ (अनाज की कटाई) और प्रयाण यज्ञ (संरक्षण) के रूप में निर्दिष्ट किया गया है।
- ❖ नुआखाई में नौ रंगों का प्रयोग होता है। ये नौ रंग विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनमें स्वच्छता, निमंत्रण, नई फसल की खोज, उपहार देना आदि शामिल हैं।
- ❖ इसमें मुख्य उत्सव से पहले नौ अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता है।



- ❖ इस त्यौहार की परंपरागत मान्यता के अनुसार 14 वीं शताब्दी ईस्वी में , पटना राज्य के संस्थापक राजा रमई देव ने एक स्वतंत्र राज्य के निर्माण में कृषि के महत्व को महसूस किया क्योंकि इस क्षेत्र के लोगों की निर्वाह अर्थव्यवस्था शिकार और भोजन एकत्र करने पर आधारित थी।
- ❖ इस प्रकार नुआखाई को संबलपुरी संस्कृति और विरासत का प्रतीक बनाने का श्रेय भी राजा रमई देव को दिया जा सकता है क्योंकि संबलपुरी क्षेत्र में राज्य के गठन के दौरान, नुआखाई ने एक अनुष्ठान उत्सव के रूप में कृषि को जीवन शैली को बढ़ावा देने में प्रमुख भूमिका निभाई थी।
- ❖ 2020 में, भारत में महामारी फैलने के बावजूद, नुआखाई जुहार महोत्सव के दौरान अस्थायी रूप से तालाबंदी को हटा दिया गया था। इसने ओडिशा के लोगों को खुशी-खुशी अपनी फसल और अपने देवताओं की पूजा करने और उत्सव के साथ आगे बढ़ने की अनुमति दी, जैसा कि वे हमेशा करते हैं।

